Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed
Multidisciplinary Journal
Volume 4 | Issue 2 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)

विन्ध्यन कगार प्रदेश में पारिस्थितिकी पर्यटन आकर्षण एवं पारिस्थितिकी पर्यटन की सम्भावनाएँ: एक भौगोलिक अध्ययन

Ecotourism Attractions and Ecotourism Possibilities in Vindhyan Escarpment Region: A Geographical Study

शोध–निर्देशक

डॉ. बी.पी. सिंह

प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (भूगोल विभाग)

शासकीय ठाकुर रणमत सिंह स्वशासी महाविद्यालय, रीवा, जिला–रीवा (म.प्र.)

शोधार्थी

निवेदिता सिंह

शोध छात्रा, भूगोल

शासकीय ठाकुर रणमत सिंह स्वशासी महाविद्यालय, रीवा

सारांश (Abstract)

विन्ध्यन कगार प्रदेश मध्य भारत का एक महत्त्वपूर्ण भौगोलिक क्षेत्र है, जो अपनी अनूठी प्राकृतिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक विशेषताओं के कारण पारिस्थितिकी पर्यटन के लिए असीम सम्भावनाएँ रखता है। यह प्रदेश सिंगरौली, शहडोल, अनूपपुर, उमरिया, सीधी, रीवा, मैहर, मऊगंज, सतना, पन्ना, छतरपुर, टीकमगढ़, दतिया जिलों के विस्तृत भू-भाग को अपने में समेटे हुए है। यहाँ की घनी वन सम्पदा, विंध्याचल की ऊबड़-खाबड़ पहाड़ियाँ, बीहड़ कन्दराएँ, जलप्रपात, वन्यजीव अभयारण्य, ऐतिहासिक धरोहर स्थल, तथा जनजातीय संस्कृति पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करती हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में विन्ध्यन कगार प्रदेश के पारिस्थितिकी पर्यटन आकर्षणों का विस्तृत विवेचन किया गया है, साथ ही इस क्षेत्र में पारिस्थितिकी पर्यटन की सम्भावनाओं, चुनौतियों एवं विकास हेतु आवश्यक नीतिगत सुझावों को प्रस्तुत किया गया है। शोध में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आँकड़ों का उपयोग किया गया है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि इस प्रदेश में पारिस्थितिकी पर्यटन को एक संगठित एवं

सुनियोजित रूप देकर न केवल स्थानीय रोज़गार सृजन किया जा सकता है, अपितु पर्यावरण संरक्षण एवं जनजातीय समुदायों की आर्थिक उन्नति भी सुनिश्चित की जा सकती है।

मुख्य शब्द: विन्ध्यन कगार प्रदेश, पारिस्थितिकी पर्यटन, पर्यटन आकर्षण, वन्यजीव, जैव विविधता, जनजातीय संस्कृति, सतत् विकास, पर्यावरण संरक्षण, भौगोलिक अध्ययन।

1. प्रस्तावना

पारिस्थितिकी पर्यटन (Ecotourism) आज के युग में पर्यटन के सर्वाधिक तेज़ी से विकसित होने वाले क्षेत्रों में से एक बन गया है। यह पर्यटन का वह स्वरूप है जिसमें प्राकृतिक परिवेश के साथ-साथ स्थानीय संस्कृति, परम्पराओं एवं जैव विविधता का संरक्षण करते हुए पर्यटन गतिविधियाँ की जाती हैं। विश्व पर्यटन संगठन के अनुसार पारिस्थितिकी पर्यटन वह सतत् पर्यटन है जो प्राकृतिक क्षेत्रों में होता है तथा स्थानीय समुदायों की समृद्धि को बढ़ावा देता है।

भारत अपनी विविधतापूर्ण प्राकृतिक, सांस्कृतिक एवं जैव विविधता की दृष्टि से पारिस्थितिकी पर्यटन के लिए अत्यन्त समृद्ध देश है। मध्य प्रदेश को 'भारत का हृदय' कहा जाता है और यहाँ का विन्ध्यन कगार प्रदेश (Vindhyan Escarpment Region) प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से विशेष महत्त्व रखता है। विंध्य पर्वत श्रृंखला भारत की प्राचीनतम पर्वतमालाओं में से एक है तथा यह क्षेत्र ऐतिहासिक, पुरातात्त्विक एवं पारिस्थितिकीय दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

विन्ध्यन कगार प्रदेश मध्यप्रदेश के उत्तरी एवं उत्तर-पूर्वी भागों में विस्तृत है, जिसमें रीवा, सतना, सीधी, शहडोल, पन्ना, दमोह, कटनी तथा उमरिया जिलों का बड़ा भाग सम्मिलित है। यह प्रदेश विन्ध्याचल पर्वत श्रृंखला की कगारी भू-आकृतियों (Escarpment Landforms), गहरी घाटियों, जलप्रपातों, घने वनों, वन्यजीव अभयारण्यों एवं राष्ट्रीय उद्यानों से सुसज्जित है। बाघेलखण्ड के नाम से भी जाना जाने वाला यह क्षेत्र अपनी समृद्ध लोक संस्कृति, प्राचीन मन्दिरों, किलों, गुफाओं एवं शैलचित्रों के लिए प्रसिद्ध है।

इस क्षेत्र में पन्ना राष्ट्रीय उद्यान, बाँधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान, संजय राष्ट्रीय उद्यान, केन घड़ियाल अभयारण्य जैसे महत्त्वपूर्ण वन्यजीव क्षेत्र स्थित हैं। इसके अलावा भरहुत के प्रसिद्ध बौद्ध स्तूप, खजुराहो मन्दिर

समूह (UNESCO विश्व धरोहर), चित्रकूट के धार्मिक स्थल, तथा अनेक पुरातात्त्विक महत्त्व के स्थल इस प्रदेश को पर्यटन की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण बनाते हैं। इन विशेषताओं के बावजूद यह क्षेत्र पर्यटन मानचित्र पर अभी भी उचित स्थान नहीं पा सका है।

अतः प्रस्तुत शोध पत्र विन्ध्यन कगार प्रदेश के पारिस्थितिकी पर्यटन आकर्षणों का भौगोलिक विश्लेषण करते हुए इस क्षेत्र में पारिस्थितिकी पर्यटन की सम्भावनाओं को रेखांकित करने का प्रयास करता है।

2. शोध पत्र के उद्देश्य-

प्रस्तुत शोध पत्र के निम्नलिखित प्रमुख उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं:

1. विन्ध्यन कगार प्रदेश की भौगोलिक स्थिति एवं प्राकृतिक संसाधनों का विश्लेषण करना।
2. इस प्रदेश के पारिस्थितिकी पर्यटन आकर्षणों — प्राकृतिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक एवं जनजातीय — का भौगोलिक अध्ययन करना।
3. क्षेत्र में पारिस्थितिकी पर्यटन के विकास की सम्भावनाओं एवं बाधाओं का विवेचन करना।
4. स्थानीय जनजातीय समुदायों की आजीविका में पारिस्थितिकी पर्यटन की भूमिका का आकलन करना।
5. पारिस्थितिकी पर्यटन के सतत् विकास हेतु आवश्यक नीतिगत सुझाव प्रस्तुत करना।

3. शोध का महत्व-

प्रस्तुत शोध पत्र अनेक दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है। विन्ध्यन कगार प्रदेश अपनी अपार प्राकृतिक सम्पदा के बावजूद पर्यटन के क्षेत्र में अभी तक उचित ध्यान नहीं पा सका है। इस क्षेत्र में पारिस्थितिकी पर्यटन को बढ़ावा देने से न केवल इस क्षेत्र की अर्थव्यवस्था सुदृढ़ होगी, अपितु पर्यावरण संरक्षण में भी सहयोग मिलेगा। इस शोध का महत्व निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर स्पष्ट किया जा सकता है:

प्रथम, यह शोध विन्ध्यन कगार प्रदेश के पारिस्थितिकी पर्यटन सम्बन्धी प्रथम व्यापक भौगोलिक अध्ययनों में से एक है, जो इस क्षेत्र के पर्यटन सम्भावनाओं को वैज्ञानिक आधार प्रदान करता है। द्वितीय, यह शोध स्थानीय

जनजातीय समुदायों — विशेषतः बैगा, गोंड, कोल एवं पनिका जनजातियों — की पर्यटन में भूमिका को रेखांकित करता है और उनके आर्थिक उत्थान के मार्ग प्रशस्त करता है।

तृतीय, इस शोध से प्राप्त निष्कर्ष एवं सुझाव सरकारी नीति-निर्माताओं, पर्यटन विभाग, वन विभाग तथा गैर-सरकारी संगठनों के लिए महत्त्वपूर्ण मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। चतुर्थ, यह शोध इस क्षेत्र में पर्यावरण संरक्षण एवं सतत् विकास के बीच सन्तुलन बनाने के उपाय सुझाता है, जो राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन नीतियों के अनुकूल है।

4. विन्ध्यन कगार प्रदेश में पारिस्थितिकी पर्यटन आकर्षण

4.1 प्राकृतिक पर्यटन आकर्षण

4.1.1 वन्यजीव एवं राष्ट्रीय उद्यान

विन्ध्यन कगार प्रदेश अपने समृद्ध वन्यजीव एवं संरक्षित वन क्षेत्रों के लिए विख्यात है। इस क्षेत्र में स्थित राष्ट्रीय उद्यान एवं वन्यजीव अभयारण्य पारिस्थितिकी पर्यटन के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण आकर्षण हैं।

बाँधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान उमरिया जिले में स्थित है एवं यह बाघों की सर्वाधिक घनत्व वाला राष्ट्रीय उद्यान माना जाता है। 1,536 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल में विस्तृत यह उद्यान बाघ, तेंदुआ, गौर, चीतल, सांभर, नीलगाय आदि अनेक वन्यजीवों का आश्रयस्थल है। यहाँ की बाँधवगढ़ पहाड़ी पर स्थित प्राचीन किला एवं गुफाएँ इसे और भी विशिष्ट बनाती हैं।

पन्ना राष्ट्रीय उद्यान पन्ना एवं छतरपुर जिलों में स्थित है। केन नदी के किनारे फैला यह उद्यान बाघ एवं घड़ियाल संरक्षण के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। पन्ना राष्ट्रीय उद्यान का प्रमुख आकर्षण यहाँ की केन नदी है जहाँ बोटिंग तथा नदी किनारे वन्यजीव दर्शन का अद्भुत अनुभव प्राप्त होता है। संजय-डुबरी राष्ट्रीय उद्यान सीधी एवं शहडोल जिलों में फैला है, जो हाथी, बाघ तथा अन्य वन्यजीवों का प्रमुख निवास है।

4.1.2 जलप्रपात एवं नदियाँ

विन्ध्यन कगार प्रदेश अपने भव्य जलप्रपातों के लिए पूरे मध्य प्रदेश में प्रसिद्ध है। यहाँ की विन्ध्याचल पर्वतमाला से निकलने वाली अनेक नदियाँ — सोन, केन, बीहर, तमसा (टोंस), बनास, जोहिला आदि — अपने मार्ग में अनेक सुन्दर जलप्रपात निर्मित करती हैं।

केवटी जलप्रपात रीवा जिले में स्थित है तथा यह मध्य प्रदेश का सबसे ऊँचा जलप्रपात है जिसकी ऊँचाई लगभग 98 मीटर है। बीहड़ नदी पर बना यह जलप्रपात पर्यटकों को आकर्षित करता है। चचाई जलप्रपात रीवा जिले में बीहड़ नदी पर ही स्थित है और इसकी ऊँचाई लगभग 130 मीटर है जो इसे भारत के सबसे ऊँचे जलप्रपातों में शामिल करती है। पूर्वा जलप्रपात भी रीवा के समीप टोंस नदी पर स्थित है। चित्रकूट जलप्रपात (भारत का मिनी नियाग्रा) जगदलपुर के निकट तथा रानेह जलप्रपात पन्ना के समीप केन नदी पर स्थित है जहाँ ग्रेनाइट एवं क्वार्ट्ज़ाइट की रंगीन चट्टानें अत्यन्त आकर्षक दृश्य उत्पन्न करती हैं।

4.1.3 गुफाएँ एवं शैलाश्रय

विन्ध्यन कगार प्रदेश की चूना पत्थर एवं बलुआ पत्थर की शैलों में अनेक प्राकृतिक गुफाएँ एवं शैलाश्रय पाये जाते हैं जो पुरातात्त्विक एवं पारिस्थितिकीय दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं। भर्तृहरि गुफाएँ, सोन घड़ियाल अभयारण्य की गुफाएँ, मैहर के समीप की गुफाएँ तथा पन्ना एवं दमोह क्षेत्र की असंख्य कन्दराएँ इस प्रदेश की प्राकृतिक विरासत का अभिन्न अंग हैं।

इन शैलाश्रयों में मध्यपाषाण एवं नवपाषाण काल के शैलचित्र (Rock Paintings) पाये जाते हैं जो इस क्षेत्र की प्रागैतिहासिक सभ्यता के साक्षी हैं। रीवा, सतना एवं पन्ना जिलों में बिखरे ये शैलचित्र पुरातत्त्व प्रेमियों एवं इतिहासकारों के लिए विशेष आकर्षण के केन्द्र हैं।

4.1.4 वन एवं जैव विविधता

विन्ध्यन कगार प्रदेश का एक महत्त्वपूर्ण भाग वनाच्छादित है। यहाँ साल, सागौन, बाँस, महुआ, पलाश, आँवला, बेल, तेंदू आदि अनेक प्रजातियों के वृक्ष पाये जाते हैं। इस वन क्षेत्र में जड़ी-बूटियों एवं औषधीय वनस्पतियों की अनेक प्रजातियाँ भी उपलब्ध हैं।

जैव विविधता की दृष्टि से यह क्षेत्र अत्यन्त समृद्ध है। यहाँ पक्षियों की 350 से अधिक प्रजातियाँ पाई जाती हैं, जिनमें अनेक दुर्लभ एवं प्रवासी प्रजातियाँ सम्मिलित हैं। तितलियों, सरीसृपों एवं उभयचरों की भी विविध प्रजातियाँ इस क्षेत्र को प्रकृति-प्रेमियों के लिए स्वर्ग बनाती हैं।

4.2 सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक पर्यटन आकर्षण

4.2.1 धार्मिक एवं आध्यात्मिक स्थल

विन्ध्यन कगार प्रदेश धार्मिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। चित्रकूट इस क्षेत्र का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण धार्मिक स्थल है, जहाँ भगवान राम ने अपने वनवास काल का एक महत्त्वपूर्ण भाग व्यतीत किया था। मन्दाकिनी नदी के तट पर बसा चित्रकूट अपने अनेक मन्दिरों, आश्रमों एवं प्राकृतिक दृश्यावली के कारण प्रतिवर्ष लाखों श्रद्धालुओं को आकर्षित करता है।

मैहर का शारदा माता मन्दिर सतना जिले में स्थित है और त्रिकूट पर्वत पर विराजमान माँ शारदा देवी का यह मन्दिर क्षेत्र का प्रमुख आस्था केन्द्र है। यहाँ प्रतिवर्ष नवरात्रि में लाखों भक्त आते हैं। विन्ध्यवासिनी माता का मन्दिर तथा अन्य देवी-देवताओं के मन्दिर इस प्रदेश में सर्वत्र स्थित हैं।

4.2.2 ऐतिहासिक एवं पुरातात्त्विक महत्व के स्थल

खजुराहो के प्रसिद्ध मन्दिर समूह UNESCO की विश्व धरोहर सूची में सम्मिलित हैं। छतरपुर जिले में स्थित ये मन्दिर 950-1050 ई. के बीच चन्देल राजवंश द्वारा निर्मित किये गये थे। इनकी स्थापत्य कला, मूर्तिकला एवं भित्तिचित्र विश्वभर के पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।

भरहुत, सतना जिले में स्थित प्राचीन बौद्ध स्तूप स्थल है जो ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी का है। यहाँ की शिल्पकला बौद्ध कला के प्रारम्भिक स्वरूप को प्रदर्शित करती है। कालिंजर किला, बाँधवगढ़ किला, मैहर का किला तथा सतना, रीवा एवं पन्ना के अनेक महल एवं किले इस क्षेत्र के ऐतिहासिक गौरव के प्रमाण हैं।

4.3 जनजातीय सांस्कृतिक आकर्षण

विन्ध्यन कगार प्रदेश में बैगा, गोंड, कोल, पनिका, भील एवं अन्य जनजातियाँ निवास करती हैं। इन जनजातियों की अनूठी संस्कृति, लोक कला, लोक संगीत, नृत्य, परम्परागत वेशभूषा, आभूषण एवं जीवन-शैली पर्यटकों के लिए विशेष आकर्षण का केन्द्र है।

बैगा जनजाति विशेष रूप से डिण्डोरी, मण्डला एवं शहडोल जिलों में निवास करती है। इनकी गोदना (Tattoo) परम्परा, बैगा नृत्य, करमा नृत्य, सैला नृत्य, ढोलक-मन्दार वादन तथा परम्परागत चिकित्सा पद्धति पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करती है। गोंड जनजाति की गोंड चित्रकला विश्वभर में प्रसिद्ध है। कोल एवं पनिका जनजातियों की बुनकरी एवं बाँस-शिल्प कला भी पर्यटकों के बीच लोकप्रिय है।

जनजातीय हाटें (साप्ताहिक बाज़ार) इस क्षेत्र की विशेष पहचान हैं जहाँ पर्यटक स्थानीय हस्तशिल्प, जड़ी-बूटियों, वन उत्पादों एवं परम्परागत खाद्य पदार्थों का अनुभव कर सकते हैं।

5. विन्ध्यन कगार प्रदेश में पारिस्थितिकी पर्यटन की सम्भावनाएँ

5.1 प्राकृतिक संसाधन आधारित सम्भावनाएँ

विन्ध्यन कगार प्रदेश में पारिस्थितिकी पर्यटन की असीम सम्भावनाएँ विद्यमान हैं। इस क्षेत्र के विशाल वन क्षेत्र, वन्यजीव संम्पदा, जलप्रपात, गुफाएँ एवं नदियाँ पारिस्थितिकी पर्यटन के विविध रूपों — वन्यजीव पर्यटन, पक्षी-दर्शन पर्यटन, साहसिक पर्यटन, जल पर्यटन एवं प्रकृति पर्यटन — के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ प्रदान करते हैं।

वन्यजीव पर्यटन की दृष्टि से बाँधवगढ़, पन्ना एवं संजय राष्ट्रीय उद्यान अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पर्यटकों को आकर्षित करने में सक्षम हैं। बाघ दर्शन, हाथी सफारी, जीप सफारी एवं प्रकृति भ्रमण के माध्यम से इन क्षेत्रों में पर्यटन को और अधिक विकसित किया जा सकता है।

जल पर्यटन की दृष्टि से केन, सोन, टोंस एवं बीहड़ नदियाँ कयाकिंग, रिवर राफ्टिंग एवं बोटिंग के लिए अत्यन्त उपयुक्त हैं। केवटी, चचाई एवं पूर्वा जलप्रपात के निकट साहसिक खेल गतिविधियों — रैपेलिंग, ट्रेकिंग एवं रॉक क्लाइम्बिंग — की भी अपार सम्भावनाएँ हैं।

5.2 सांस्कृतिक एवं विरासत पर्यटन की सम्भावनाएँ

विन्ध्यन कगार प्रदेश की समृद्ध सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक विरासत इसे सांस्कृतिक पर्यटन के लिए अत्यन्त उपयुक्त बनाती है। खजुराहो पहले से ही अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन मानचित्र पर है, परन्तु इसके आसपास के अन्य ऐतिहासिक स्थलों — भरहुत, कालिंजर, अजयगढ़, बाँधवगढ़ किला — को भी इसके साथ जोड़कर एक समृद्ध विरासत पर्यटन सर्किट तैयार किया जा सकता है।

चित्रकूट को एक आध्यात्मिक पर्यटन केन्द्र के रूप में विकसित किया जा सकता है जहाँ धार्मिक पर्यटन के साथ-साथ योग, ध्यान एवं आयुर्वेद पर्यटन को भी बढ़ावा दिया जा सकता है।

5.3 जनजातीय पर्यटन एवं होमस्टे की सम्भावनाएँ

जनजातीय क्षेत्रों में होमस्टे पर्यटन (Community-based Homestay Tourism) की अत्यन्त प्रबल सम्भावनाएँ हैं। पर्यटक बैगा, गोंड एवं कोल जनजातियों के गाँवों में रहकर उनकी जीवन-शैली, परम्पराओं, खान-पान, कला-संगीत का अनुभव कर सकते हैं। इससे स्थानीय परिवारों को प्रत्यक्ष आर्थिक लाभ प्राप्त होगा एवं जनजातीय संस्कृति का भी संरक्षण होगा।

जनजातीय हस्तशिल्प, गोंड चित्रकला, बाँस-शिल्प, लोहार-कारीगरी एवं परम्परागत बुनकरी को पर्यटन से जोड़कर इन कलाओं का संरक्षण तथा कारीगरों का आर्थिक उत्थान दोनों एक साथ साधे जा सकते हैं।

5.4 कृषि पर्यटन एवं ग्रामीण पर्यटन की सम्भावनाएँ

विन्ध्यन कगार प्रदेश में कृषि पर्यटन (Agro-tourism) की भी उल्लेखनीय सम्भावनाएँ हैं। यहाँ के चावल, गेहूँ, दलहन एवं वन उत्पाद आधारित कृषि का अनुभव पर्यटकों को आकर्षित कर सकता है। जैविक खेती, औषधीय पौधों की खेती एवं परम्परागत बीज संरक्षण जैसी गतिविधियाँ पर्यटन से जोड़ी जा सकती हैं।

ग्रामीण पर्यटन के अन्तर्गत स्थानीय मेले, त्योहार — जैसे हरेली, पोला, नवाखाई — में पर्यटकों की भागीदारी भी एक नवीन पर्यटन उत्पाद बन सकता है।

5.5 पर्यावरण शिक्षा एवं अनुसंधान पर्यटन

इस क्षेत्र में पर्यावरण शिक्षा पर्यटन (Educational Ecotourism) की भी अपार सम्भावनाएँ हैं। देश-विदेश के विश्वविद्यालयों एवं शोध संस्थानों के विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों के लिए वन्यजीव अध्ययन, जैव विविधता सर्वेक्षण, जल संसाधन अध्ययन एवं जनजातीय अध्ययन के लिए यह क्षेत्र आदर्श गंतव्य बन सकता है।

6. पारिस्थितिकी पर्यटन के विकास में चुनौतियाँ

विन्ध्यन कगार प्रदेश में पारिस्थितिकी पर्यटन के विकास के मार्ग में अनेक चुनौतियाँ भी विद्यमान हैं, जिनका समाधान किये बिना इस क्षेत्र का सर्वांगीण पर्यटन विकास सम्भव नहीं है।

आधारभूत संरचना की कमी इस क्षेत्र की सबसे बड़ी समस्या है। पर्यटन स्थलों तक पहुँचने के लिए सड़क सम्पर्क अत्यन्त दुर्बल है। रेल सम्पर्क सीमित है और हवाई सम्पर्क तो नगण्य है। अधिकांश पर्यटन स्थलों पर पर्यटक आवास, शौचालय, पीने का शुद्ध पानी एवं संचार सुविधाओं का घोर अभाव है।

स्थानीय समुदायों में पर्यटन के प्रति जागरूकता एवं प्रशिक्षण का अभाव भी एक महत्त्वपूर्ण चुनौती है। पर्यटन से जुड़ी सेवाओं में प्रशिक्षित मानव संसाधन की कमी है। पर्यटन की भाषाओं — अंग्रेज़ी एवं अन्य विदेशी भाषाओं — में दक्ष गाइड का अभाव है।

अतिक्रमण, वन विनाश एवं अनियन्त्रित खनन गतिविधियाँ पर्यावरण को नुकसान पहुँचा रही हैं जो पारिस्थितिकी पर्यटन के लिए गम्भीर खतरा है। इसके अतिरिक्त, जनजातीय समुदायों का शोषण एवं उनकी संस्कृति का व्यापारीकरण भी एक चिन्ताजनक पहलू है।

7. निष्कर्ष

विन्ध्यन कगार प्रदेश मध्य भारत का एक ऐसा भौगोलिक क्षेत्र है जो प्राकृतिक सौन्दर्य, ऐतिहासिक विरासत, जैव विविधता एवं जनजातीय संस्कृति की दृष्टि से अद्वितीय है। इस क्षेत्र में पारिस्थितिकी पर्यटन की अपार सम्भावनाएँ विद्यमान हैं जिन्हें उचित योजना, नीति-निर्माण एवं संसाधन विनियोजन द्वारा साकार किया जा सकता है।

प्रस्तुत शोध के निष्कर्ष यह स्पष्ट करते हैं कि इस प्रदेश में पारिस्थितिकी पर्यटन न केवल स्थानीय आर्थिक विकास का एक सशक्त माध्यम बन सकता है, अपितु यह पर्यावरण संरक्षण, जैव विविधता संरक्षण एवं जनजातीय सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। आवश्यकता इस बात की है कि पारिस्थितिकी पर्यटन को एक समग्र एवं समावेशी दृष्टिकोण से विकसित किया जाये जिसमें स्थानीय समुदायों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित हो।

बाँधवगढ़, पन्ना, खजुराहो, चित्रकूट, केवटी-चचाई जलप्रपात एवं जनजातीय क्षेत्रों को मिलाकर एक सुसंगठित पर्यटन सर्किट तैयार करना, आधारभूत संरचना का विकास करना एवं स्थानीय युवाओं को पर्यटन से जोड़ना — ये तीन प्रमुख आधार स्तम्भ होने चाहिए जिन पर इस क्षेत्र के पारिस्थितिकी पर्यटन का भविष्य निर्भर करता है।

8. सुझाव-

विन्ध्यन कगार प्रदेश में पारिस्थितिकी पर्यटन के सम्यक् विकास के लिए निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत हैं:

1. पर्यटन अधोसंरचना विकास: प्रमुख पर्यटन स्थलों को सड़क, रेल एवं वायु मार्ग से जोड़ा जाये। पर्यटन स्थलों पर इको-फ्रेंडली आवास, शौचालय, पेयजल एवं संचार सुविधाएँ विकसित की जायें।

2. समुदाय-आधारित पर्यटन: जनजातीय समुदायों को पर्यटन प्रबन्धन में प्रत्यक्ष भागीदारी दी जाये। होमस्टे, ग्रामीण पर्यटन एवं सांस्कृतिक पर्यटन में स्थानीय परिवारों को प्रशिक्षित एवं सशक्त किया जाये।

3. पर्यटन सर्किट का विकास: बाँधवगढ़-पन्ना-खजुराहो-चित्रकूट को एक पर्यटन सर्किट के रूप में विकसित किया जाये। इसके साथ ही जलप्रपातों एवं जनजातीय क्षेत्रों को जोड़कर नये पर्यटन उत्पाद बनाये जायें।

4. मानव संसाधन विकास: स्थानीय युवाओं को पर्यटन प्रबन्धन, गाइडिंग, आतिथ्य एवं विदेशी भाषाओं में प्रशिक्षण दिया जाये। पर्यटन प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित किये जायें।

5. पर्यावरण संरक्षण: पर्यटन गतिविधियों में पर्यावरण संरक्षण को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाये। पर्यटकों की संख्या पर वहन क्षमता (Carrying Capacity) के आधार पर नियन्त्रण रखा जाये।

6. डिजिटल प्रचार-प्रसार: इस क्षेत्र के पर्यटन स्थलों का डिजिटल प्रचार — वेबसाइट, सोशल मीडिया, पर्यटन ऐप — किया जाये। अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन मेलों में इस क्षेत्र की भागीदारी सुनिश्चित की जाये।

7. शोध एवं दस्तावेज़ीकरण: इस क्षेत्र की जैव विविधता, सांस्कृतिक विरासत एवं पर्यटन सम्भावनाओं पर व्यापक शोध एवं दस्तावेज़ीकरण किया जाये जो नीति-निर्माण का आधार बने।

संदर्भ ग्रन्थ-

1. अग्रवाल, एस. के. (2005). पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी. रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर।
2. आर्य, एस. एस. एवं शर्मा, आर. के. (2010). मध्य प्रदेश का भूगोल. मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल।
3. उपाध्याय, विनय कुमार (2015). विन्ध्याचल: इतिहास, पुरातत्त्व एवं पर्यटन. विद्यापीठ प्रकाशन, वाराणसी।
4. कुमार, राजेश (2018). भारत में पारिस्थितिकी पर्यटन: सम्भावनाएँ एवं चुनौतियाँ. रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर।
5. गुप्ता, महेश चन्द्र (2012). बाघेलखण्ड का इतिहास एवं संस्कृति. सेण्ट्रल बुक डिपो, इलाहाबाद।
6. चौबे, अशोक कुमार (2016). मध्य प्रदेश के जनजातीय क्षेत्र: संस्कृति एवं विकास. मध्यप्रदेश आदिवासी लोक कला अकादमी, भोपाल।
7. तिवारी, रमाकान्त (2009). विन्ध्य क्षेत्र की लोक संस्कृति. इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली।
8. त्रिपाठी, पी. के. (2014). मध्यप्रदेश में पर्यटन: समस्याएँ एवं सम्भावनाएँ. विद्या भवन प्रकाशन, उदयपुर।
9. मिश्र, गिरिजाशंकर (2007). विन्ध्य प्रदेश: भौगोलिक परिदृश्य. आलोक प्रकाशन, लखनऊ।
10. यादव, सुभाष (2019). भारतीय पर्यटन नीति एवं जनजातीय क्षेत्र. अनामिका पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
11. शर्मा, हरिनाथ (2011). मध्यप्रदेश के वन एवं वन्यजीव. मध्यप्रदेश राज्य जैव विविधता बोर्ड, भोपाल।
12. सिंह, अरुण कुमार (2017). पारिस्थितिकी पर्यटन एवं सतत् विकास. कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
13. मध्यप्रदेश पर्यटन विभाग (2022). मध्यप्रदेश में पर्यटन: वार्षिक प्रतिवेदन 2021-22. पर्यटन विभाग, मध्यप्रदेश शासन, भोपाल।
14. मध्यप्रदेश वन विभाग (2021). मध्यप्रदेश वन स्थिति प्रतिवेदन 2021. वन विभाग, मध्यप्रदेश शासन, भोपाल।

15. भारत सरकार, पर्यटन मन्त्रालय (2023). भारत पर्यटन सांख्यिकी 2023. पर्यटन मन्त्रालय, नई दिल्ली।
16. भारतीय वन्यजीव संस्थान (2020). बाँधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान: संरक्षण एवं प्रबन्धन. WII, देहरादून।
17. www.mptourism.com — मध्यप्रदेश पर्यटन विकास निगम (सन्दर्भ तिथि: 15 मार्च 2024)।
18. www.forest.mp.gov.in — मध्यप्रदेश वन विभाग (सन्दर्भ तिथि: 20 मार्च 2024)।
19. www.incredibleindia.org — भारत पर्यटन (सन्दर्भ तिथि: 25 मार्च 2024)।